1. मॉड्यूल और इसकी संरचना का विवरण

मॉड्यूल विवरण	
विषय नाम	अर्थशास्त्र
पाठ्यक्रम का नाम	भारतीय आर्थिक विकास 01 (कक्षा XI, सेमेस्टर - 1)
मॉड्यूल का नाम / शीर्षक	1991 से आर्थिक सुधार: भाग 1
मॉड्यूल Id	keec_10301
पूर्वअपेक्षित ज्ञान	भारतीय अर्थव्यवस्था के बारे में पूर्व-ज्ञान (1950-1990)
उद्देश्य	इस अध्याय को पढ़ने के बाद, शिक्षार्थी निम्नलिखित को समझने में सक्षम होंगे: • आर्थिक सुधारों से क्या अभिप्राय है? • आर्थिक सुधार के पीछे क्या कारण था? • नई आर्थिक नीति • उदारीकरण
मुख्य शब्द	आर्थिक सुधार, नई आर्थिक नीति, उदारीकरण

2. Development Team

Role	Name	Affiliation
National MOOC Coordinator (NMC)	Prof. Amarendra P. Behera	CIET, NCERT, New Delhi
Program Coordinator	Dr. Mohd. Mamur Ali	CIET, NCERT, New Delhi
Course Coordinator (CC) / PI	Prof. Neeraja Rashmi	DESS, NCERT, New Delhi
Subject Matter Expert (SME)	Mr. Naveen Sadhu	Guru Nanak Public School, Rajouri Garden, New Delhi
Review Team	Dr. Meera Malhan Dr. Himanshu Singh	DCAC, University of Delhi, Satyawati College (Eve.), University of Delhi
Translator	Dr. Bharat Bhushan	Assistant Prof., Shyamlal College, University of Delhi

विषय-सूची:

1. परिचय
2. आर्थिक सुधारों के कारण
3. नई आर्थिक नीति - विशेषताएं
4. उदारीकरण
   - 4.1 औद्योगिक क्षेत्र सुधार
   - 4.2 वित्तीय क्षेत्र सुधार
   - 4.3 कर सुधार
   - 4.4 विदेशी विनिमय सुधार
5. व्यापार और निवेश नीति सम्बन्धी सुधार
6. सारांश

1. परिचय

स्वतंत्रता के बाद से, भारत ने नियोजित आर्थिक प्रणाली तथा बाजार आर्थिक प्रणाली - दोनों के लाभों को मिलाकर मिश्रित अर्थव्यवस्था के ढांचे का पालन किया है। कुछ विद्वानों का मानना है कि पिछले कुछ वर्षों में, इस नीति के परिणामस्वरूप ऐसे विभिन्न नियमों और कानूनों की स्थापना हुई, जिनका उद्देश्य अर्थव्यवस्था को नियंत्रित और विनियमित करना था लेकिन वास्तव में इसके कारण विकास और विकास की प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न हुई। अन्य विद्वानों का कहना है कि भारत, जिसने लगभग शून्य विकास दर से अपनी आर्थिक विकास की यात्रा शुरू की, बचत दर में अच्छी-ख़ासी वृद्धि हासिल करने में सक्षम रहा है, एक विविध औद्योगिक क्षेत्र विकसित किया है जो विभिन्न प्रकार के सामानों का उत्पादन करता है और खाद्य उत्पादन में निरंतर विस्तार हुआ है जिससे खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित हुई है।

1991 में, भारत को विदेशी ऋण से संबंधित एक गंभीर आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा- सरकार विदेशों से लिए गए अपने ऋणों का पुनर्भुगतान करने में सक्षम नहीं थी; विदेशी मुद्रा भंडार, जिसे हम आम तौर पर पेट्रोलियम और अन्य महत्वपूर्ण वस्तुओं को आयात करने के लिए बनाए रखते हैं, गिरकर उन स्तरों तक पहुंच गए जो पंद्रह दिन तक के भुगतान के लिये भी पर्याप्त नहीं

थे। आवश्यक वस्तुओं की बढ़ती कीमतों से संकट और गहरा गया था। इन सभी परिस्थितियों ने सरकार को नीतिगत उपायों के एक नए समूह को पेश करने के लिए प्रेरित किया जिसने हमारी विकास रणनीतियों की दिशा बदल दी।

आर्थिक सुधारों से हमारा अभिप्राय अर्थव्यवस्था को अधिक बाजार और सेवा उन्मुख बनाने और निजी क्षेत्र और विदेशी निवेश की भूमिका का विस्तार करने के लक्ष्य के साथ आर्थिक नीतियों के एक समूह से है।

आर्थिक सुधारों के उद्देश्य

1. अर्थव्यवस्था को और अधिक प्रतिस्पर्द्धात्मक बनाना ।
2. आर्थिक वृद्धि में तेजी लाना।
3. उद्योगों की दक्षता और उत्पादकता बढ़ाना।
4. भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास के लिए वैश्विक संसाधनों का उपयोग करना।
5. सार्वजनिक उद्यमों की भूमिका को तर्कसंगत बनाना और उनके प्रदर्शन में सुधार करना ।
6. राजकोषीय घाटे को नियंत्रित करना।
7. भुगतान संतुलन के चालू खाते के घाटे को कम करना।

2. आर्थिक सुधारों के कारण

वर्ष 1991 में भारत की आर्थिक स्थिति दयनीय थी। ऐसा कई कारणों के कुल प्रभाव के कारण था। *आइए देश में प्रमुख आर्थिक सुधार लागू करने के विभिन्न कारणों पर चर्चा करें:*

• **सार्वजनिक क्षेत्र का खराब प्रदर्शन:** 40 वर्षों की अवधि (1951-90) में, सार्वजनिक क्षेत्र को भारत के आर्थिक विकास के लिए काम करने के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका सौंपी गई थी। शुरुआती 15 वर्षों के दौरान, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम (PSUs) ने संतोषजनक प्रदर्शन किया, लेकिन इसके बाद उनमें से अधिकांश को नुकसान होने लगा। कुछ सार्वजनिक उद्यमों को छोड़कर, सार्वजनिक क्षेत्र का समग्र प्रदर्शन बहुत निराशाजनक था। सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों की एक बड़ी संख्या को हुए भारी नुकसान को देखते हुए, सरकार ने आवश्यक सुधारों की आवश्यकता पर जोर दिया और निजी क्षेत्र को अधिक महत्व दिया।

• **भुगतान संतुलन का घाटा:** भुगतान संतुलन (BoP) में घाटा तब होता है जब आयात के लिए कुल विदेशी भुगतान निर्यात से कुल विदेशी प्राप्तियों से अधिक होता है। भारी टैरिफ और कोटा लागू करने के बाद भी, आयात में तेज वृद्धि हुई। दूसरी ओर, अंतर्राष्ट्रीय बाजार में भारतीय वस्तुओं की कम गुणवत्ता और उच्च कीमतों के कारण निर्यात की वृद्धि दर धीमी रही थी। 1980-81 से भारत का भुगतान संतुलन (BoP) का घाटा लगातार बढ़ रहा है। यह 1980-81 में 2,210 करोड़ रुपये और 1990-91 में 17,367 करोड़ रुपये हो गया था।

• **मुद्रास्फीति:** मुद्रा आपूर्ति में वृद्धि और आवश्यक वस्तुओं की कमी के कारण अर्थव्यवस्था में सामान्य मूल्य स्तर में लगातार वृद्धि हुई थी। वर्ष 1991 में मुद्रास्फीति की दर लगभग 17 प्रतिशत के उच्च स्तर पर पहुंच गई थी। इसने आयात और निर्यात के बीच की खाई को और बढ़ा दिया क्योंकि भारत का निर्यात विश्व बाजार में अप्रतिस्पर्धी हो गया और हमारी निर्यात आय में भारी गिरावट आई।

• **विदेशी मुद्रा भंडार में गिरावट:** 1991 में, विदेशी मुद्रा भंडार गिर कर न्यूनतम स्तर पर पहुँच गया और इससे देश में विदेशी मुद्रा संकट पैदा हो गया। विदेशी मुद्रा भंडार उस स्तर तक गिर गया जो न तो दो सप्ताह से अधिक के आयात के लिए पर्याप्त था और न ही अंतर्राष्ट्रीय ऋणदाताओं को ब्याज का भुगतान करने के लिए।

यह संकट इतना विकट हो गया कि सरकार को और ऋण जुटाने के लिए सोने को गिरवी रखना पड़ा। ऋण देने के लिए, इन अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों ने भारत से उम्मीद की थी कि वह अर्थव्यवस्था को खोलेगा तथा इसे उदारीकृत करेगा। उन्होंने (i) निजी क्षेत्र पर प्रतिबंध हटाने के लिए, (ii) बाजार में सरकार की भूमिका को कम करने के लिए, और (iii) व्यापार प्रतिबंधों को हटाने के लिए सुझाव दिए। भारत विश्व बैंक और आईएमएफ द्वारा रखी गई शर्तों पर सहमत हुआ और नई आर्थिक नीति की घोषणा की गई।

• **ऋण का भारी बोझ:** सरकार का व्यय राजस्व की तुलना में बहुत अधिक था। नतीजतन, सरकार को बैंकों, जनता और अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों से पैसा उधार लेना पड़ा। 1991 में राजकोषीय घाटा सकल घरेलू उत्पादन (जीडीपी) का 8.4 प्रतिशत था। आईएमएफ ने 7 बिलियन डॉलर का ऋण देने का निर्णय किया, लेकिन साथ ही जोर देकर कहा कि भारत सरकार को अर्थव्यवस्था में आर्थिक सुधार लाने चाहिए।

• **खाड़ी संकट:** 1990-91 में इराक युद्ध के कारण कच्चे तेल की कीमतों में तेजी आई। भारत को खाड़ी देशों से भारी मात्रा में अनिवासी भारतीयों द्वारा प्रेषित धन प्राप्त होता था। युद्ध के मद्देनजर, इसमें भारी गिरावट आई। खाड़ी संकट ने BoP घाटे को और अधिक बढ़ा दिया।

• **अकुशल प्रबंधन:** भारतीय अर्थव्यवस्था के अकुशल प्रबंधन में वित्तीय संकट की उत्पत्ति का मूल ढूँढा जा सकता है। सरकार आंतरिक स्रोतों जैसे कराधान, सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों को चलाने, आदि से पर्याप्त राजस्व उत्पन्न नहीं कर पा रही थी और साथ ही साथ सरकारी व्यय इतने बड़े अन्तर से अपने राजस्व से अधिक होने लगे कि राजकोषीय संकट पैदा हो गया। कई बार, अन्य देशों और विदेशी वित्तीय संस्थानों से उधार ली गयी विदेशी मुद्रा उपभोग की जरूरतों को पूरा करने पर खर्च की जाती थी।

3. नई आर्थिक नीति

नई आर्थिक नीति (NEP) की घोषणा जुलाई 1991 में की गई थी। इसमें आर्थिक सुधारों की विस्तृत श्रृंखला शामिल थी। नीति का मुख्य उद्देश्य अर्थव्यवस्था में अधिक प्रतिस्पर्धी माहौल बनाना और फर्मों के प्रवेश और विकास में आने वाली बाधाओं को दूर करना था।

नई आर्थिक नीति को मोटे तौर पर दो प्रकार के उपायों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

1. स्थिरीकरण के उपाय: ये वे अल्पकालिक उपाय हैं जिनका उद्देश्य है:

(i) पर्याप्त विदेशी मुद्रा भंडार बनाए रखकर भुगतान घाटे के संतुलन को ठीक करना; तथा

(ii) बढ़ती कीमतों को नियंत्रण में रखकर मुद्रास्फीति पर अंकुश लगाना ।

2. संरचनात्मक सुधार के उपाय: ये वे दीर्घकालिक उपाय हैं जिनका उद्देश्य है;

(i) अर्थव्यवस्था की दक्षता में सुधार; तथा

(ii) भारतीय अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त दृढ़ताओं को दूर करके अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा बढ़ाना।

(iii) अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय उत्पादों की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाना।

नई आर्थिक नीति की मुख्य विशेषताएं

सरकार ने विभिन्न नीतिगत बदलाव शुरू किए जो तीन श्रेणियों के अंतर्गत आते हैं:

1. उदारीकरण

2. निजीकरण

3. भूमंडलीकरण

4. उदारीकरण

1991 से पहले, उद्योगों की स्थापना, आयात और निर्यात व्यापार, विदेशी मुद्रा में के कारोबार आदि के लिए लाइसेंस की आवश्यकता के संदर्भ में भारत में बड़ी संख्या में सरकारी प्रतिबंध थे, जुलाई 1991 में, आर्थिक सुधारों के एक पैकेज की घोषणा की गई जिनसे भारत में "उदारीकरण" की प्रक्रिया की शुरुआत हुई । उदारीकरण का अर्थ है निजी क्षेत्र पर प्रतिबंधों को हटाना। दूसरे शब्दों में, इसका तात्पर्य है कि व्यापार और उद्योग को अवांछित सरकारी नियंत्रणों और प्रतिबंधों से मुक्त करना।

उदारीकरण में दो चीजें शामिल हैं:

i) निजी क्षेत्र के लिए बनाए गए नियमों और विनियमों में छूट।

(ii) निजी क्षेत्र को उन उद्योगों को चलाने की अनुमति देना जो पहले सार्वजनिक क्षेत्र के लिए आरक्षित थे।

उदारीकरण का उद्देश्य निजी क्षेत्र और बहुराष्ट्रीय निगमों को निवेश करने व विस्तार करने, अर्थव्यवस्था को अधिक प्रतिस्पर्धात्मक बनाने और संचालन की दक्षता बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन प्रदान करके देश की आर्थिक क्षमता को खोलना था। इससे देश का ऋण का बोझ कम होगा और विकसित देशों से पूंजीगत वस्तुओं और मशीनरी का आयात हो सकेगा।

उदारीकरण के तहत सरकार द्वारा किए गए आर्थिक सुधारों में निम्नलिखित शामिल हैं:

1. औद्योगिक क्षेत्र सुधार
2. वित्तीय क्षेत्र सुधार
3. कर सुधार
4. विदेशी मुद्रा सुधार
5. व्यापार और निवेश नीति सुधार

4.1 औद्योगिक क्षेत्र सुधार

औद्योगिक क्षेत्र में आवश्यक सुधार करने के लिए, सरकार ने 24 जुलाई, 1991 को नई औद्योगिक नीति पेश की। *औद्योगिक नीति सुधारों के अंतर्गत विभिन्न उपायों में शामिल हैं;*

1. औद्योगिक लाइसेंसिंग में कमी: नई नीति ने उद्योगों की एक छोटी सूची (जैसे शराब, सिगरेट, खतरनाक रसायन, रक्षा उपकरण, औद्योगिक विस्फोटक, आदि) को छोड़कर सभी उद्योगों के लिए औद्योगिक लाइसेंस को समाप्त कर दिया। (i) नई इकाइयों की स्थापना; या (ii) निर्माण की मौजूदा लाइन के विस्तार या विविधता के लिए किसी लाइसेंस की आवश्यकता नहीं थी। हालांकि, सुरक्षा और रणनीतिक विचारों से संबंधित कुछ उद्योगों के लिए लाइसेंस की आवश्यकता थी।

2. सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका को कम करना: आर्थिक सुधारों में एक बड़ा कदम देश के औद्योगिक विकास में सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका में कमी थी। सार्वजनिक क्षेत्र के लिए विशेष रूप से आरक्षित उद्योगों की संख्या 17 से घटाकर 8 कर दी गई।

3. लघु उद्योगों के लिए आर्थिक सुधार: लघु उद्योगों द्वारा उत्पादित कई सामान अब अनारक्षित हो गए हैं। लघु उद्योगों के लिए निवेश की सीमा बढ़ाकर पाँच करोड़ रूपये कर दी गयी कई उद्योगों में कीमतें सरकार द्वारा तय की जाने के बजाय बाजार शक्तियों के आधार पर निर्धारित करने की अनुमति दी गई थी।

4. एकाधिकार और प्रतिबंधात्मक व्यापार व्यवहार (MRTP) अधिनियम: पहले उत्पादन क्षमता को लाइसेंस के आधार पर होती थी। उदारीकरण के साथ, बड़ी कंपनियों के लिए विस्तार, नए उपक्रमों की स्थापना, विलय, समामेलन आदि के लिए पूर्व अनुमोदन लेने की आवश्यकता को समाप्त कर दिया गया। अब निर्माता अपने कारोबार का विस्तार अपने हिसाब से कर सकते थे जो बाजार की स्थितियों पर निर्भर करेगा। 2002 में, MRTP अधिनियम को प्रतिस्पर्धा अधिनियम 2002 (Competition Act, 2002) के द्वारा प्रतिस्थापित किया गया है जो अधिक उदार है।

4.2 वित्तीय क्षेत्र सुधार

वित्तीय क्षेत्र में वाणिज्यिक बैंक, निवेश बैंक, स्टॉक एक्सचेंज और विदेशी मुद्रा बाजार जैसे वित्तीय संस्थान शामिल हैं। भारत में वित्तीय क्षेत्र भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) द्वारा नियंत्रित किया जाता है। भारतीय रिजर्व बैंक की भूमिका नियामक या नियंत्रक से वित्तीय क्षेत्र के सुगमकर्ता हो गई थी। उदाहरण के लिए, 1991 तक, RBI ऋण और जमा पर बैंकों के लिए ब्याज दर तय कर रहा था। लेकिन अब, वित्तीय क्षेत्र को आरबीआई से परामर्श किए बिना कई मामलों पर निर्णय लेने की अनुमति दी गई थी। वित्तीय क्षेत्र के सुधारों के कारण निजी क्षेत्र के भारतीय तथा विदेशी बैंकों की

स्थापना हुई। उदाहरण के लिए, ICICI जैसे भारतीय बैंकों और HSBC जैसे विदेशी बैंकों ने प्रतिस्पर्धा में वृद्धि की और कम ब्याज दरों और बेहतर सेवाओं के माध्यम से उपभोक्ताओं को लाभान्वित किया।

बैंकों में विदेशी निवेश की सीमा को बढ़ाकर लगभग 50 प्रतिशत कर दिया गया। विदेशी संस्थागत निवेशक (FII) जैसे मर्चेंट बैंकर, म्यूचुअल फंड और पेंशन फंड को अब भारतीय वित्तीय बाजारों में निवेश करने की अनुमति है। हालाँकि, बैंकों को भारत और विदेशों से संसाधन जुटाने की अनुमति दी गई है, लेकिन खाताधारकों और राष्ट्रों के हितों की रक्षा के लिए RBI की कुछ शक्तियों को बरकरार रखा गया है। बैंकों को आरबीआई की मंजूरी के बिना नई शाखाएं (कुछ शर्तों को पूरा करने के बाद) स्थापित करने की स्वतंत्रता दी गई । अब देश के लगभग हर कोने में बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध हैं।

4.3 कर सुधार

कर सुधार से अभिप्राय सरकार की कराधान और सार्वजनिक व्यय सबंधी नीतियों, जिन्हें सामूहिक रूप से इसकी 'राजकोषीय नीति' के रूप में जाना जाता है, में सुधारों से है। कर दो प्रकार के होते हैं:

(i) प्रत्यक्ष कर: वे कर जहां कराघात तथा करापात दोनों एक ही व्यक्ति पर होते हैं, अर्थात कर का बोझ उसी व्यक्ति पर पड़ता है जिस पर यह लगाया गया है। इसमें व्यक्तियों की आय के साथ-साथ व्यावसायिक उद्यमों के मुनाफे पर कर शामिल हैं। उदाहरण के लिए, आयकर (व्यक्तिगत आय पर कर) और निगम कर (कंपनियों के मुनाफे पर कर)। इन करों के भार को स्थानांतरित नहीं किया जा सकता।

(ii) अप्रत्यक्ष कर: वे कर जहां कराघात तथा करापात दो अलग-अलग लोगों होते हैं, अर्थात कर लगाया एक व्यक्ति पर जाता है किन्तु उसका भार दूसरे व्यक्ति पर पड़ता है। ये कर उपभोग व्यय पर प्रभाव के द्वारा व्यक्तियों की वास्तविक आय को प्रभावित करते हैं। अप्रत्यक्ष कर आम तौर पर वस्तुओं और सेवाओं पर लगाए जाते हैं। उदाहरण के लिए, बिक्री कर, मूल्य वर्धित कर (वैट), सीमा शुल्क (कस्टम ड्यूटी) आदि इन करों के भार को स्थानांतरित किया जा सकता है। प्रमुख कर सुधार निम्नलिखित हैं:

1. करों में कमी: 1991 के बाद से आय और निगम कर में लगातार कमी आई है, क्योंकि ऊंची कर

दरें कर चोरी का एक महत्वपूर्ण कारण थीं। अब यह व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है कि आयकर की मध्यम दरें आय के स्वैच्छिक खुलासे और बचत को प्रोत्साहित करती हैं ।

2. अप्रत्यक्ष करों में सुधार: वस्तुओं और सेवाओं के लिए एक सांझे राष्ट्रीय बाजार की स्थापना करने के लिए अप्रत्यक्ष करों में काफी सुधार किया गया है। देश के सभी राज्यों में वस्तु एवं सेवा कर (GST) के एक समान लागू करने के प्रयास किए जा रहे हैं। GST को अंततः 1 जुलाई 2017 को लागू किया गया।

3. प्रक्रिया का सरलीकरण: करदाताओं की ओर से बेहतर कर अनुपालन को प्रोत्साहित करने के लिए, कई प्रक्रियाओं को सरल बनाया गया है। 1991 से पहले, करदाता टैक्स रिटर्न दाखिल करने से हिचकते थे क्योंकि किसी व्यक्ति के टैक्स रिटर्न दाखिल करने के लिए बहुत सारी औपचारिकताएं और जटिलताएं होती थीं।

4.4 विदेशी मुद्रा सुधार

विदेशी मुद्रा बाजार में किए गए महत्वपूर्ण सुधार निम्नलिखित हैं:

- **रुपये का अवमूल्यन:** अवमूल्यन का अर्थ सरकार द्वारा विदेशी मुद्रा के रूप में घरेलू मुद्रा के मूल्य में कमी करना है। भुगतान संतुलन के संकट से उबरने के लिए, विदेशी मुद्राओं के संदर्भ में रुपये का अवमूल्यन किया गया था। इससे विदेशी मुद्रा की आमद में वृद्धि हुई। सरकार ने रुपये के मूल्य को अपने नियंत्रण से मुक्त कर दिया। नतीजतन, विदेशी मुद्रा के संदर्भ में भारतीय रुपये के विनिमय मूल्य का निर्धारण मांग और आपूर्ति की बाज़ार शक्तियों के द्वारा होता है।

5. व्यापार और निवेश नीति सुधार

1991 से पहले, घरेलू उद्योगों की सुरक्षा के लिए आयात पर बहुत सारे प्रतिबंध लगाए गए थे। हालांकि, इस संरक्षण ने घरेलू उद्योगों की दक्षता और प्रतिस्पर्धा को कम कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप, इन उद्योगों की विकास दर धीमी हो गई। इसलिए औद्योगिक उत्पादन में अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को बढ़ाने के लिए, विदेशी निवेश और अर्थव्यवस्था में प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने के लिए, घरेलू उद्योगों की दक्षता को बढ़ावा देने और नवीनतम तकनीकों को अपनाने और विदेशी निवेशकों को इक्विटी में अधिकांश हिस्सेदारी रखने की स्वतंत्रता देने के लिए, व्यापार और

निवेश में सुधार शुरू किए गए थे।

व्यापार और निवेश नीति में महत्वपूर्ण सुधारों में निम्नलिखित शामिल हैं:

(i) आयात और निर्यात पर मात्रात्मक प्रतिबंध को हटाना: नई आर्थिक नीति के तहत, आयात और निर्यात पर मात्रात्मक प्रतिबंध बहुत कम हो गए थे। उदाहरण के लिए, विनिर्मित उपभोक्ता वस्तुओं और कृषि उत्पादों के आयात पर मात्रात्मक प्रतिबंध अप्रैल 2001 से पूरी तरह हटा दिए गए थे।

(ii) निर्यात कर हटाना: अंतर्राष्ट्रीय बाजार में भारतीय वस्तुओं की प्रतिस्पर्धा को बढ़ाने के लिए निर्यात करों को हटा दिया गया था।

(iii) आयात शुल्क में कमी: विदेशी बाजार में घरेलू सामानों की स्थिति में सुधार के लिए आयात शुल्क कम किए गए थे। घरेलू उद्योगों को संरक्षण की नीति अब छोड़ दी गई है। निर्यात प्रोत्साहन और आयात प्रतिस्थापन पर जोर देने में स्पष्ट बदलाव आया है।

(iv) आयात लाइसेंसिंग प्रणाली में छूट: खतरनाक और पर्यावरण के प्रति जोखिम वाले उद्योगों को छोड़कर, शेष उद्योगों के लिए आयात लाइसेंसिंग को समाप्त कर दिया गया। इसने घरेलू उद्योगों को बेहतर कीमतों पर कच्चे माल का आयात करने के लिए प्रोत्साहित किया, जिससे उनकी दक्षता बढ़ी और वे अधिक प्रतिस्पर्धी बन सके।

6. सारांश

1991 से पहले, भारतीय अर्थव्यवस्था विदेशी मुद्रा भंडार में गिरावट, आयात और निर्यात के बीच बढ़ती खाई और ऊंची मुद्रास्फीति जैसी समस्याओं का सामना कर रही थी। 1991 में वित्तीय संकट और आईएमएफ और विश्व बैंक जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों के दबाव के कारण नीति निर्माताओं को अपनी आर्थिक नीतियों को बदलने के लिए मजबूर होना पड़ा। औद्योगिक और वित्तीय क्षेत्रों में बड़े सुधार किए गए। उस समय किये गए प्रमुख आर्थिक सुधारों में विदेशी मुद्रा में अविनियमन और उदारीकरण शामिल थे। इसने विभिन्न प्रकार के नए रास्ते खोले जो भारतीय अर्थव्यवस्था में एक मील का पत्थर साबित हुए।